ॐ



श्री राज्ञास्तुति

विरचिता

पूज्य पाद श्री स्वामी व्यध्याधर जी

सम्पादक तथा प्रकाशक :

सेवक श्री गोपी नाथ सपरू "मदन" काशमीरी

भानु मुहल्ला, श्री नगर, काशमीर।

प्रथम बार १००० मूल्य १० पैसे

असतो मा अमृतं गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय।

देवी दर्शनूक्य प्रताप दि न्यथ्रन्
गुण राग पनुन दिम कनन्
चयानी नाम वली चयतम गच्छू थवुन्
पादन अथव सीव करुन् ।
वानी पूज़ तोतायि हन्ज़ दिम सता
गच्छू ग्वन तू कीर्तन करुन्
यथ यथ जायि उपासन भगवति
आसी गच्छय व्रुय करुन् ॥२८-२॥ (सपरू)

❀ ॐ नमः श्री जगदम्बायै ❀

ॐ विश्वेश्वरी निखिल देव महर्षि पूज्या,
सिंहासना त्रिनयना भुजगोपवीता।
शङ्खाम्बुजास्यऽमृत कुम्भक पञ्च शाखा,
राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ॥१॥

❀ भाष ❀

जगत ईश्वरी छि यसदीव यर्ष सारी पूज़ान,
सुह आसनस सरूप नाल्य ज्यन्यत्रछय दारान्।
अथि छुस खडग अमृत नूट शङ्ख पदम आसान्,
राज़ा दृहय भगवती रूज़िन प्रसन्न पाठय ॥१॥

जन्माटवीप्रदहने दववह्नि भूता,
तत्पाद पङ्कजरजोगत चेतसां या ।
श्रेयोवतां सुकृतिनां भवपाश भेत्त्री,
राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ॥२॥

* भाष *

इमज़न चरण छि अमि सून्दि मनि मञ्ज़ दारान्,
ज़न्म वन बनिथ अग्नी छ्रख लादि ज़ालान् ।
मक्रयन इमन युसू बन्दन संसार चटान् ।
राज्ञा द्रहय भगवती रूज़िन प्रसन्न पाठय ॥२॥

देव्या ययाऽनुज राक्षसदुष्टचेतो,
न्यग्भावितं चरणनूपुरशिञ्जितेन ।
इन्द्रादिदेवहृदयं प्रविकासयन्ती,
राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ॥३॥

* भाष *

यमि दीविये असुर दानव दुष्ट महान्,
रूफ्नि पादनूय तल रटिथ श्वफ्नि युस सपनान् ।
इन्द्राज़ ब्यायि ति दीवन हृदयस सु फ्वलवान्,
राज्ञा ह्वय भगवती रूज़िन प्रसन्न पाठय ॥३॥

दुःखार्णवे हि पतितं शरणागतं या,
चोद्धृत्य सा नयति धाम परं दयाब्धि ।
विष्णुर्गजेन्द्रमिव भीत भयापहर्त्री,
राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ॥४॥

* भाष *

शरनागतन तू प्यमूत्यन यूस दुःख छु आसान् ,
सुय दुःखकरानछय मनि दूर म्बुक्री छि दिवान ।
भय मन्ज़् रछान युथ रछान ह्यस्त व्यपण भगवान ,
राज्ञी छ्हय भगवती रूज़िन प्रसन्न पाठय ॥४॥

यस्या विचित्रमखिलं हि जगत्प्रपञ्चं,
कुक्षौ विलीनमपि सृष्टिविसृष्टिरूपात्।
आविर्भवत्यविरतं चिदचित्स्वभावं,
राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ॥५॥

* भाष *

युस् सोर ज़गत रंगू रंगू स्थावर ज़न्गम रूप,
तस सन्ज़ बनिथ सू आसान उत्पत प्रलय रूप।
च्यत्रि सुय तिथुय छु नेरान युद ओस प्रलय रूप,
राज्ञा छुहय भगवती रूज़िन प्रसन्न पाठय ॥५॥

यत्पादपङ्कजरजःकणज प्रसादा,

द्योगीश्वरैर्विगतकल्मषमानसैस्तत् ।

प्राप्तं पदं जनिविनाशहरं परं सा,

राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ॥६॥

* भाष *

यमि सून्ज़ि पादगर्दि सूत्य योगी श्वरन मन् ,

मल तथ छुलुख अदू च्हयुनुख ज्योन मरन बन्धन ।

प्रसाद ह्न्योख परम धाम प्रोवुख छि रोज़ान् ,

राज्ञा द्रहय भगवती रूज़िन प्रसन्न पाठ्य ।



यत्पादपङ्कजरजांसि मनोमलानि,
संमार्जयन्ति शिवविष्णुविरिञ्चि देवैः ।
मृग्यान्यऽपश्चिमतनोः प्रणुतानि माता,
राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ॥७॥

* भाष *

यसि सून्ज़ि पाद गर्दि सूत्य मन मल छु हारान्,
ब्रह्मा विष्ण तू शिव छी तिम पाद च्छारान् ।
पाश्चात जन्म पुरष छी माता च्य नमान्,
राज्ञा हृदय भगवती रूज़िन प्रसन्न पाठ्य ॥७॥

यद्दर्शनामृतनदी महदोघयुक्ता,
संप्लावयत्यखिलभेदगुहास्त्वऽनन्ता ।
तृष्णाहरा सुकृतिनां भवतापहर्त्री,
राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ॥८॥

* भाष *

अमृत वानि वरिथूय दर्शन नदी स्वय:
स्वय छय अनन्त ब्रिन-भाव स्वफून्य छय यूप सुय ।
सन्ताप त्रेष चट्टूनि सत पुरुषनस्य स्वय,
राज्ञा द्वहय भगवती रूाज़न प्रसन्न पाठ्य ॥८॥

यत्पादचिन्तन दिवाकररश्मिमाला,
चान्तर्वहिष्करणवर्गसरोजपण्डम् ।
ज्ञानोदये सति विकास्य तमोपहर्त्री,
राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ॥६॥

* भाष *

जूचू सूर्य सून्ज़् हिषमाल सुमरन छि यस पाद,
अन्ताहकर्ण-वह्यपकर्ण पम्पोष डल पाद ।
वुज़वान छय ज्ञान फूलवान गटकार चटान पाद,
राज्ञा द्रहय भगवती रूज़िन प्रसन्न पाठ्य ॥६॥

हंसस्थिता सकल शब्दमयी भवानी,
वाग्वादिनी हृदय पुष्कर चारिणीया ।
हंसीव हंस रजनीश्वर वह्निनेत्रा,
राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ॥७॥

* भाष *

हंसस खसिथ सकल शब्दमयी भवानी,
हृदयि कमलसूय मन्ज़ वसान स्वय वाकवानी ।
सूर्ये चन्द्र अग्नि न्यत्रव स्वय हंसानी,
राज्ञा द्रहय भगवती रूज़िन प्रसन्न पाठ्य ॥७॥

यासोम सूर्य वपुषा सततं सरन्ती,

मूलाश्रयात्तडिदिवाऽऽविधिरन्ध्रमीद्या।

मध्यास्थिता सकल नाडिसमूह पूर्णा,

राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना॥८॥

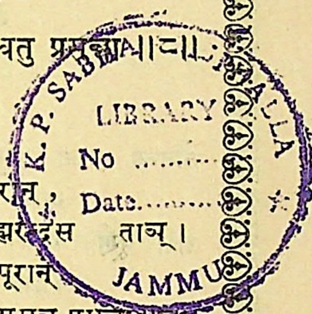
* भाष *

सूर्यचन्द्र रूप हिपज़न ब्वथितूय छय फेरान्,

मूलाधार प्यठ्ठ व्रह व्रह्मरन्ध्रस तान्।

मन्ज़भाग विहि छय सारिनूय नाडियन स्व पूरान्,

राज्ञा द्रहय भगवती रूज़िन प्रसन्न पाठ्य॥८॥



चैतन्य पूरित समस्त जगद्विचित्रा,
मातृ प्रमेयपरिमाणतया चकास्ति ।
या पूर्णवृत्त्यर्हामति स्वपदाधिरूढा,
राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ॥६॥

* भाष *

चैतन्य ज़गत युसु छु ज़न रंगू रंगू वनानी,
ज़ान ज़ानवुन तू ज़ाननी ज्ययि किन्य वज़ानी ।
यस पूर्ण भाव अहं पद पननुय थवानी,
राज्ञी द्रहय भगवती रूज़िन प्रसन्न पान्य ॥६॥

या चित्क्रमक्रमतया प्रविभाति नित्या,
स्वातन्त्र्य शक्तिरमला गतभेद भावा ।
स्वात्मस्वरूपसुविमर्शपरैः सुगम्या,
राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ॥१०॥

* भाष *

कर्म-अकर्म च्यत शक्त युसू द्रह छय वासान् ,
विन भाव किन्य स्व निर्मल सुतन्त्रभाव सान ।
इस आत्म च्यनतन करान तिम छी लबान थान् ,
राज्ञा द्रहय भगवती रूज़िन प्रसन्न पाठ्य ॥१०॥

याकृत्य पञ्चकनिभालनलालसैस्तैः,

सन्दृश्यते निखिल वेद्यगतापि शश्वत् ।

सान्तर्धृता परप्रमातृपदं विशन्ती,

राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ॥११॥

* भाष *

इम छी लगिथ व्यमर्शस मन्ज़ पञ्चकृतू किस्,

प्रथ कुनि मनज़ बुछान छिस प्रथ कुनि बुछान छिस् ।

हुष्यार छय पद रटिथ स्वय शक्ति छय गुण छिस,

राज्ञा द्रहय भगवती रूज़िन प्रसन्न पाठ्य ॥११॥

याऽनुत्तरात्मनि पदे परमाऽमृताब्धौ,

स्वातन्त्र्यशक्ति लहरिवबहिः सरन्ती ।

संलीयते स्वरसतः स्वपदे सभावा,

राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ॥१२॥

* भाष *

पानि पान थानू पनने स्वसू व्यथि तिच्छूय ज़न् ,

यिथू व्वुथि तरन्ग अमृत सूत्य भरिथूय समन्द्रन ।

व्यथि सूत्य निवान छि सोरुय फीरिथ त्वतुय ज़न,

राज्ञा द्रहय भगवती रूज़िन प्रसन्न पाठ्य ॥१२॥

मेरोः सदैवहिदरीषु विचित्रवाग्भि,

गायान्ति या भगवतीं परिवादिनीभिः ।

विद्याधराहि पुलकाङ्कित विग्रहाः सा,

राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ॥१३॥

* भा. *

न्यती समीरच्यन ग्वफन नाना प्रकार गीत,

ग्यवान छि च्ये भगवती सेतार स्वर सूत्य ।

रूमू हर्ष सान व्यध्याधर गायन करान कूत्य,

राज्ञा द्रहय भगवती रूज़िन प्रसन्न पाठ्य ॥१३॥

राज्ञी सदा भगवती मनसा स्मरामि ॥
राज्ञी सदा भगवती वचसा गृणामि ॥
राज्ञी सदा भगवती शिरसा नमामि ॥
राज्ञी सदा भगवती शरणं प्रपद्ये ॥१७॥

* भाष *

राज्ञा द्रह्य भगवती मनू किन्य स्वरान छुस ॥
राज्ञा द्रह्य भगवती व्यखि किन्य परान छुस ॥
राज्ञा द्रह्य भगवति कल किन्य नमान छुस ॥
राज्ञा द्रह्य भगवती आमुत शरण छुस ॥

...याः स्तोत्रमिदं पुण्यं यः पठेद्भक्तिमान्नरः
नित्यं देव्याः प्रसादेन शिवसायुज्यमाप्नुयात् ॥
...ति श्री जगदम्बास्तुति-राजानक-विद्याधर विरचिता शुभदा
...भूयात ॥ ॥ इति शिवम् ॥

कृतज्ञता

ज्ञात होवे कि श्री स्वामी विध्याधर जी महाराज विरचिता श्री राज्ञास्तुति की काशमीरी भाषा में जो टीका श्री महादेवजी ने की है उसके अतियुक्त सेवक ने अपनी बुद्धि अनुसार काशमीरी भाषा में अनुवाद किया है। जिसको देवनागरी भाषा में प्रकाशत किया।

इस कार्य में श्रीमान् नील कण्ठ जी सेवक श्री स्वामी विध्याधर जी का मैं हार्दिक धन्यवाद देता हूँ। स्वामी जी के सेवकू और राज्ञा-भगवती प्रेमियों से आशा है कि अगर मेरी कोई त्रुटी रह गई हो तो क्षमा करें। (सपरू) १२-७-६५

शक्ति प्रिंटिंग प्रैस जम्मू में छपकर प्रकाशित की।